अध्याय 20

भक्ति व सूफी आंदोलन

ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करने के लिए अनेक तरीके अपनाए जाते हैं। इसके लिए लोग मंदिर, मस्जिद अथवा गिरजाघर जैसे धार्मिक स्थलों पर जाकर पूजा–आराधना करते हैं। हम कह सकते हैं कि ये लोग ईश्वर की भक्ति कर रहे हैं। इस तरह से भगवान् की भक्ति करने का, भगवान् को याद करने का यह एक तरीका है। समय–समय पर देश में अनेक धार्मिक महापुरुष हुए जिन्होंने लोगों को भक्ति मार्ग का अनुसरण करने का उपदेश दिया। मध्यकाल में भी विभिन्न संतों द्वारा भक्ति आन्दोलन की धारा बहाई गई।

भक्ति आन्दोलन का तात्पर्य

भक्ति शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के भज शब्द से हुई है, जिसका तात्पर्य भजना अथवा उपासना करना है। जब व्यक्ति सांसारिक कार्यों से विरक्त होकर एकान्त में तन्मयता के साथ ईश्वर का स्मरण करता है, तो उसे भक्ति कहा जाता है एवं भक्ति करने वालों को भक्त कहा जाता है।

भक्ति आन्दोलन का उद्‌भव

भारत में भक्ति की परम्परा अनादि काल से चली आ रही है। कहा जाता है कि भक्ति की परम्परा का प्रचलन महाभारत के समय में भी था। जब गीता में अर्जुन से भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि सभी धर्मों को छोड़ कर तुम मेरी शरण में आ जाओ, तब अर्जुन को भगवान् श्री कृष्ण भक्ति मार्ग पर चलने का उपदेश दे रहे होते हैं।

यदि भक्त सच्चे मन से भक्ति करे तो ईश्वर कई रूपों में भक्त को मिल सकता है। भक्ति के लिए ईश्वर के कई रूप देखने को मिलते हैं। कहीं मनुष्य के रूप में तो कहीं प्रकृति के विविध रूपों में।

भक्ति आन्दोलन की विशेषताएँ

इस युग के भक्ति आन्दोलन के संतों की एक विशेषता यह थी कि ये स्थापित जाति भेद, समाज में फैली असमानताओं एवं कुप्रथाओं पर सवाल भी उठाते थे। अपने प्रभु से प्यार करने में, लोगों के साथ मिल बैठकर रहने में ही सार है, ये समझाते थे। वे अपने अनुयायियों को सीख देते थे कि हमें परमात्मा द्वारा बताए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। भक्ति परम्परा से जुड़े सभी संत हर किसी से प्यार करने पर जोर देते थे। इनकी रचनाओं में बार–बार यह कहा गया है कि न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा सभी मानव बराबर हैं।

भक्ति–काव्य

अपनी बात ये सीधी सरल और बोलचाल की भाषा में कहते थे। अधिकांश भक्त–संत अपनी बात काव्य के जरिये कहते थे। लोगों को इनकी बात आसानी से समझ में आ जाती थी। चौदहवीं सदी आते–आते दक्षिण भारत के अनुरूप उत्तर भारत में भी भक्ति परम्परा की धारा बहने लगी।

भक्त संतों द्वारा रचित काव्य कहीं भगवान् के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करते, कहीं ईश्वर के अनेक रूपों की कथाएँ सुनाई जाती। समाज में फैली बुराइयों पर कटाक्ष होता, आडम्बरों को नष्ट करने की बात

आती और जाति–भेद के खिलाफ आवाज़ उठाई जाती। संत कबीर और संत गुरू नानक आदि से जिस विचारधारा का उद्‌भव हुआ है उसकी लहर आज भी दिखाई देती है मीराबाई के गीत आज भी लोगों को भगवत्–प्रेम के लिए प्रेरित करते हैं। आज भी भक्ति संतों की रचनाओं को लोग पढ़ते हैं, गाते हैं, और उन पर नाचते हैं।

दक्षिण भारत में भक्ति धारा

भक्ति धारा की लोकप्रियता दक्षिण भारत में सातवीं और नवीं सदी के बीच देखने को मिली। इसका श्रेय वहाँ के घुमक्कड़ी साधुओं को जाता है। इन घुमक्कडों में शिव भक्त नयनार के नाम से जाने जाते थे। कुछ विष्णु भक्त थे। इन्हें अलवार कहा जाता था। इन घुमक्कड़ी साधुओं की विशेषता यह थी कि ये गाँव–गाँव जाते और देवी–देवताओं की प्रशंसा में सुन्दर काव्य लिखते और उन्हें संगीत बद्ध करते।

नयनार और अलवार संतों में अनेक जातियों के लोग शामिल थे। नयनार और अलवार संतों में कई ऐसे थे जो कुम्हार, किसान, शिकारी, सैनिक, ब्राह्मण, मुखिया जैसे वर्गों में पैदा हुए तथा अनेक उस समय मानी जाने वाली 'अस्पृश्य' जातियों में पैदा हुए थे। तथापि वे अपने उच्च विचारों एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने के कारण देश में समान रूप से प्रसिद्ध हुए।

प्रमुख नयनार संतों के नाम : अप्पार, संबंदर, सुन्दरार, मणिक्कवसागार
प्रमुख अलवार संतों के नाम : पेरियअलवार, पेरियअलवार की बेटी अंडाल, नम्मालवार, तोंडरडिप्पोडी अलवार।

भक्ति परम्परा के अधीन दक्षिण में (कर्नाटक में) ग्यारहवीं सदी में रामानुज ने विष्णु की पूजा पर जोर दिया।

रामानन्द :– रामानन्द भक्ति आन्दोलन के क्षेत्र में उत्तर एवं दक्षिण के बीच एक कड़ी तथा सेतु के समान थे। ये उत्तरी भारत के भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तक माने जाते हैं। इन्होंने भक्ति के द्वारा जन–जन को नया मार्ग दिखाया। एकेश्वरवाद पर जोर देकर राम की भक्ति पर बल दिया। जाति भेद का विरोध करते हुए सामाजिक समानता पर बल दिया। उन्होंने संस्कृत के बजाय बोलचाल की भाषा में उपदेश दिए, जिससे जन साहित्य का विकास हुआ। रामानन्द के

भक्त कवयित्री अंडाल

भक्त सन्तों में से एक भक्त अंडाल को दक्षिण की मीरा भी कहा जाता है। अंडाल द्वारा रचित थिरूपवाई की रचना आज भी गाई जाती है। अंडाल का जन्म आठवीं सदी में हुआ था।

प्रमुख भक्त सन्त–

रामानन्द	कबीर
गुरू नानक	चैतन्य महाप्रभु
रविदास	दादू
मीराबाई	चोखामेला
समर्थ गुरू रामदास आदि	

शिष्यों में सभी जातियों के लोग थे जिनमें रैदास, बीर, धन्ना, तथा पीपा आदि प्रमुख थे।

उत्तरी भारत में भक्ति धारा

कबीर

कबीर :– कबीर मात्र भक्त सन्त न होकर बड़े समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज में फैली हुई कुरीतियों का डटकर विरोध किया। जनसाधारण की भाषा में उन्होंने बताया कि प्रभु सबके है, उन पर किसी वर्ग, व्यक्ति तथा धर्म–जाति का अधिकार नहीं है। कबीर धार्मिक क्षेत्र में सच्ची भक्ति का सन्देश लेकर प्रकट हुए थे। महात्मा बुद्ध के बाद कबीर, गुरूनानक आदि ने भी जातीय असमानता का विरोध किया। कबीर के अनुसार सभी व्यक्ति जन्म से समान है। जिस व्यक्ति ने अपने पवित्र कर्मों से भक्ति को अपनाया है, उसकी जाति का सम्बन्ध पूछना अनुचित है।

कबीर कर्म की श्रेष्ठता पर भी बल देते थे। ईश्वरीय एकता के सन्देश के कारण हिन्दू व मुसलमान सभी उनके अनुयायी बनने लगे। समकालीन समाज व धर्म के क्षेत्र में उनकी बातों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा था। कबीर के उपदेश हमें उनकी 'साखियों' व 'पदों' में मिलते हैं। कबीर ने बाहरी आडम्बरों का कड़ा विरोध किया।

कबीर के बारे में ऐतिहासिक जानकारी बहुत कम है। मान्यता है कि वे पंद्रहवीं–सोलहवीं सदी में हुए थे। उनका पालन–पोषण बनारस या उसके आस–पास रहने वाले जुलाहे परिवार में हुआ था। कबीर के भजन कई घूमंतु धार्मिक गायक गाते थे और ये भजन काफी लोकप्रिय रहे। इनमें से अनेकों को गुरू ग्रंथ साहिब, पंचवाणी और बीजक में संग्रहीत किया गया है।

कबीर ने गुरू को ईश्वर से भी अधिक महत्व दिया और कहा है कि –

गुरू गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।।

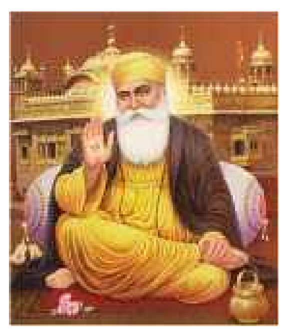
गुरूनानक

गुरूनानकः– कबीर के समान मध्यकालीन समाज को प्रभावित करने वाले सन्तों में गुरूनानक का नाम भी महत्वपूर्ण है। कबीर की तुलना में गुरू नानक के बारे में ऐतिहासिक जानकारी ज्यादा मिलती है। गुरु नानक का जन्म 1469 ई में तलवंडी में हुआ था। आजकल यह पाकिस्तान में है और इसे ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है। ये सिक्ख पंथ के संस्थापक थे तथा निर्गुण उपासना के समर्थक थे। कई जगहों पर घूमने के बाद उन्होंने करतारपुर में रावी नदी के तट पर अपना डेरा बसाया, जहाँ उनके अनुयायी जात–पांत त्याग कर इकट्ठे होकर खाना खाते थे। इसे 'लंगर' कहते थे। नानक ने उपासना और कार्य के लिए जो जगह नियुक्त की उसे 'धर्मसाल' कहते थे। आजकल उसे 'गुरुद्वारा कहते हैं। नानक के अनुयायी सभी जातियों से थे।

नानक ने अंधविश्वासों और गलत मान्यताओं को दूर करने का प्रयास किया। वे हिन्दू–मुसलमानों को समान दृष्टि से देखते थे। नानक ने अपनी बातें सीधी व सरल भाषा में कही।

मुस्लिम सन्तों का सत्संग भी उन्होंने किया। गुरुनानक के मत में सच्चा समन्वय वही है, जो ईश्वर की मौलिक एकता और उसके असर से मानव की एकता को पहचानने में सहायता दे। नानक के प्रभाव से देश को नई दिशा मिली तथा समानता, बंधुता, ईमानदारी तथा सृजनात्मक श्रम के द्वारा जीविकोपार्जन पर आधारित नई समाज व्यवस्था स्थापित हुई। गुरुनानक तथा उनके बाद आने वाले गुरुओं के उपदेशों से आगे चलकर एक नया मत 'सिख मत' भारत में उदित हुआ।

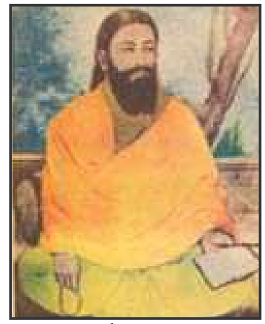
रैदास

रैदास (रविदास) :– रैदास कबीर के समकालीन थे। ये रामानन्द के परम शिष्य थे तथा जाति से चमार एवं निर्गुण भक्ति करते थे। रैदास जाति–पांति के भेदभाव में विश्वास नहीं करते थे। वे बाह्य आडम्बरों को व्यर्थ समझते और मन की शुद्धता पर जोर देते थे। मानव समानता उनका प्रमुख सिद्धान्त था। उनका कहना था–

ऐसा चाहो राज में, जहाँ मिलै सबन को अन्न।
छोट बड़ों सब सम बसै, रविदास रहै प्रसन्न।।

पूर्वी भारत में भक्ति धारा

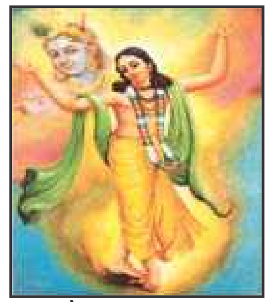
चैतन्य महाप्रभु

चैतन्य महाप्रभु :– भक्त सन्तों में बंगाल के चैतन्य महाप्रभु प्रमुख सन्त माने जाते हैं। चैतन्य कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे। इनके अनुसार "यदि कोई व्यक्ति भगवान् कृष्ण की उपासना करता है और गुरू की सेवा करता है तो माया के जाल से (कष्टों से) मुक्त हो जाता है और ईश्वर से एकाकार हो जाता है।" चैतन्य ने कर्मकाण्ड की निन्दा की। इन्होंने बताया कि व्यक्ति भक्ति में लीन होकर संकुचित भावना से मुक्त हो जाता है।

गतिविधि–

इस पाठ में यथास्थान उत्तर भारत के कुछ भक्त संतों के पद दिए गए हैं। उन्हें पढ़ें और समझने की कोशिश करें कि उसमें क्या कहा गया हैं ? सभी सन्तों ने किन बातों पर जोर दिया हैं? इन्हें समझने के लिए अपने घर के बड़ों व गुरुजी की मदद ले सकते हैं।

महाराष्ट्र में भक्ति धारा

महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और समर्थ गुरु रामदास जैसे संत हुए। यहीं पर सखूबाई नामक महिला और चोखामेला का परिवार भी लोकप्रिय थे।

महाराष्ट्र में इस काल में पंढरपुर नाम की जगह की बड़ी मान्यता थी। पंढरपुर का नाम विट्ठल नाम के स्थानीय देवता के साथ जुड़ा है। यहां भक्तगण विट्ठल की पूजा करते थे। विट्ठल को विष्णु का स्वरूप माना जाने लगा। यहाँ भी अनेक जाति और समुदायों के लोग इकट्ठे होकर अपने आराध्य की भक्ति करते थे। आजकल तो पंढरपुर की यात्रा पर हजारों लोग हर साल, पैदल चल कर जाते हैं। इन सन्तों के विचार आज भी समाज में सजीव हैं। भक्ति धारा से सम्बन्धित स्थानों पर आज भी लोग बड़ी तादाद में यात्रा करने जाते हैं।

समर्थ गुरु स्वामी रामदास

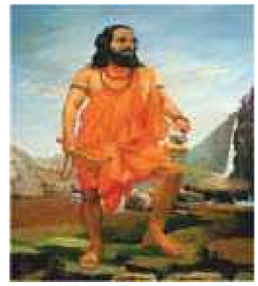

समर्थ गुरु रामदास

समर्थ गुरु स्वामी रामदास का जीवन भक्ति व वैराग्य से ओत–प्रोत था। उनके मुख से सदैव 'राम नाम' का जाप चलता रहता था। वे संगीत के उत्तम जानकार थे। ऐसा माना जाता है कि स्वामी रामदास प्रति दिन एक हजार दो सौ सूर्य नमस्कार करते थे। इसलिए उनका शरीर अत्यंत बलवान था। उनका ग्रन्थ 'दासबोध' एक गुरु–शिष्य के संवाद के रूप में है। स्वामी जी अद्वैत वेदांति और भक्ति मार्गी सन्त थे। उन्होंने अपने शिष्यों की सहायता से समाज में एक चेतना दायी संगठन खड़ा किया। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक 1100 मठ तथा अखाड़े स्थापित कर स्वराज्य स्थापना के लिए जनता को तैयार किया। ये छत्रपति शिवाजी के गुरु थे। आप भक्ति व शक्ति के प्रतीक हनुमान जी के उपासक थे।

चोखामेला

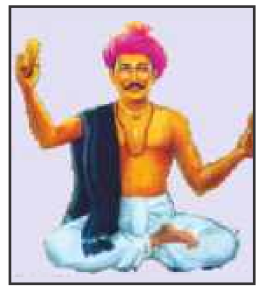

चोखामेला

महाराष्ट्र में जिन सन्तों ने जाँति–पाँति का भेदभाव मिटा कर भगवान की भक्ति की उनमें सन्त चोखामेला का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। उन्हें विठ्ठल–कृपा प्राप्त थी। सन्त ज्ञानेश्वर की सन्त मण्डली में चोखामेला का बड़ा आदर था। वे महार जाति के थे जो कि उस समय अस्पृश्य मानी जाती थी। उनके मन में बचपन से ही ईश्वर भक्ति और सन्तों जैसा जीवन जीने की इच्छा थी। विट्ठल–दर्शनों के लिए वे प्रायः पंढरपुर जाते रहते थे। उन दिनों पंढरपुर में सन्त नामदेव का बड़ा प्रभाव था। वे विट्ठल के मंदिर में भजन गाया करते थे। नामदेव के अभंग (भजन) सुनकर चोखामेला इतने प्रभावित हुए कि उन्हें अपना गुरु मानने लगे। उनके पूरे परिवार ने सन्त नामदेव से दिक्षा ली थी। उनके अभंगों की संख्या करीब 300 बताई जाती हैं। उनकी पत्नी सोयराबाई भी भक्त थी। सोयराबाई के एक अभंग का अर्थ है – ''हे प्रभु ! तेरे दर्शन करने से मेरे हृदय की सब वासनाएँ नष्ट हो गई है''।

सामाजिक परिवर्तन के आन्दोलन में चोखामेला पहले सन्त थे जिन्होंने भक्ति काव्य के दौर में सामाजिक–गैर बराबरी को समाज के सामने रखा। अपनी रचनाओं में वे वंचित समाज के लिए खासे चिंतित दिखाई पड़ते हैं। इन्हें भारत के वंचित वर्ग का पहला कवि कहा जाता है। उनके उपदेशों का सभी लोग बड़े प्रेम से सुनते थे।

राजस्थान में भक्ति धारा

राजस्थान में प्रारंभिक काल से ब्रहमा और सूर्य की पूजा लोकप्रिय रही है। विष्णु के अवतार के रूप में राम और कृष्ण की पूजा का भी काफी प्रचलन है। साथ ही शिव शक्ति व विष्णु तथा गणेश, भैरव, कुबेर, हनुमान, कार्तिकेय, सरस्वती आदि की भी पूजा होती है। राजस्थान में जैन धर्म का भी काफी प्रचलन है। राजस्थान के राजपूत शासक हिन्दू धर्म के अनुयायी थे व शक्ति की उपासना करते थे। शेष हिन्दुस्तान के समान ही, यहाँ भी धार्मिक सहिष्णुता रही है। सभी धर्म बराबरी से, शान्ति के साथ रहते आए हैं।

दादू दयाल

दादू दयाल :–निर्गुण उपासना के समर्थक संत दादू बाहरी साधना से ध्यान हटाकर व्यक्तिगत साधना पर जोर देते थे। दादू ने ईश्वर की भक्ति को समाज सेवा एवं मानववादी दृष्टि से जोड़ा। दादू ने अहंकार से दूर रहकर विनम्रता से ईश्वर के प्रति समर्पित रहने की शिक्षा दी है। दादू ने बताया कि ईश्वर की प्राप्ति न केवल प्रेम और भक्ति के माध्यम से ही संभव है, बल्कि मानवता के प्रति सेवा से भी संभव हो सकती है। दादू पहले सांभर व फिर आमेर आकर रहने लगे। जयपुर के पास नरायणा गांव में इनकी मृत्यु हुई। दादू पंथी गुरू को अधिक महत्व देते हैं। इनके शिष्य विभिन्न धर्मों, वर्गों एवं जातियों से सम्बद्ध थे। इनकी शिक्षाएँ 'दादू दयाल री वाणी' और 'दादू दयाल रा दूहा' में संगृहीत है। दादू के अनुसार ब्रह्म एक है और वह सब जगह है।

मीरा बाई

मीरा बाई:– राजस्थान भक्ति और शक्ति का प्रदेश रहा है। यहाँ के भक्त संतों में मीराबाई का नाम सर्वप्रमुख है। मीराबाई ने अपना जीवन कृष्ण भक्ति में समर्पित कर दिया। उनके द्वारा रचे काव्य प्रेम भाव से परिपूर्ण थे। अपने काव्य में उन्होंने महिला जागृति की बातें कही है। भक्त शिरोमणि मीराबाई का जन्म 16वीं सदी में मेड़ता में हुआ था। इनके पिता रतनसिंह मेड़ता के शासक दूदाजी के चौथे पुत्र थे। मीराबाई अपने पिता की इकलौती बेटी थी। मीरा के दादा–दादी भगवान् कृष्ण के परम भक्त थे और मीरा बचपन से ही कृष्ण भक्ति के गीत गाया करती थी।

इनका विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के बड़े बेटे भोजराज से हुआ। विवाह के सात साल बाद ही इनके पति का देहान्त हो गया और शीघ्रही इनके ससुर राणा सांगा और पिता रतनसिंह का भी देहान्त हो गया। इसके पश्चात् मीराबाई पूर्णरूप कृष्ण भक्ति में डूब गई। वृन्दावन और द्वारिका में इन्होंने काफी समय भजन–कीर्तन और साधु–संगति में बिताया। मीरा वृन्दावन से द्वारका गई। द्वारका में श्रीकृष्ण की भक्ति में रणछोड़जी की मूर्ति के आगे नृत्य करते हुए मीराबाई ने संसार त्याग दिया।

मीराबाई ने अपने भजनों में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम व समर्पण भाव को प्रकट किया, जैसा कि निम्न पंक्तियों से प्रकट होता है–

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरों न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।

मीराबाई की काव्य रचनाएँ आज भी लोकप्रिय हैं। मीराबाई ने महिला वर्ग के सुधार और जागृति की बात कही। मीराबाई के लगभग 250 पद हैं, जो उन्हें अमर भक्त कवयित्री बना देते हैं।

रामचरणजी एवं रामस्नेही संप्रदाय

मध्यकालीन राजस्थान में जो समाज एवं धर्म सुधार के लिए संप्रदाय स्थापित किए गए, उन संप्रदायों में रामस्नेही संप्रदाय का विशेष महत्व है। इस संप्रदाय की स्थापना रामचरणजी ने की थी। इस संप्रदाय के अनेक केन्द्र राजस्थान में स्थापित हुए, जैसे– शाहपुरा (भीलवाड़ा) में संत रामचरणजी, रैण (नागौर) में संत दरियावजी, सिंहथल (बीकानेर) में संत हरिदासजी, खेडापा (जोधपुर) में संत रामदासजी आदि।

रामचरणजी निर्गुण भक्ति में विश्वास करते थे। इन्होंने मोक्ष प्राप्ति के लिए गुरु को अत्यधिक महत्व दिया है। उनका विचार था कि गुरु ब्रह्म के समान होता है और वही मनुष्य को संसार रूपी भवसागर से पार उतार सकता है।

इस संप्रदाय में राम की उपासना पर बल दिया गया है। राम से उनका अभिप्राय निर्गुण निराकार ब्रह्म से है। उन्होंने मूर्ति पूजा व बाह्य आडम्बरों का विरोध किया।

सूफीवाद

सूफी मत का तात्पर्य एवं उद्देश्य– कहा जाता है कि सूफी वे कहलाए जो 'सफ यानी – सफ़ेद ऊन का कपड़ा पहनते थे। उनके सीधे, साधारण कपड़े पहनने का मतलब यह था कि ये वे लोग थे जो सीधे और सरल वस्त्र धारण करते थे, सीधी सरल जिंदगी जीते थे और लोगों को सीधे सरल तरीके से, प्रेम पूर्वक रहने को प्रेरित करते थे। सूफी संतों ने इस्लाम के एकेश्वरवाद का पालन किया। ये आमतौर पर वे थे जिन्होंने मुस्लिम धार्मिक विद्वानों द्वारा स्थापित इस्लामिक परम्परा की जटिलताओं और आचार–संहिता का विरोध किया। सूफी संतों ने धर्म के बाहरी आडम्बर को त्याग कर भक्ति और सभी मनुष्यों के प्रति दया तथा प्रेम भाव पर बल दिया। संत कवियों की तरह भारत में सूफी संत भी अपनी बात कविता के जरिये कहते थे। वे अपना संदेश लोगों तक कहानी सुना कर भी पहुँचाते थे। सूफियों के बारे में यह भी प्रचलित है कि इनमें कई दिव्य शक्तियाँ है। इन शक्तियों को लेकर अनेक तरह के किस्से कहानियाँ भी सूफी संतो के बारे में फैली है।

प्रमुख सूफी सन्त

- हजरत मोईनुद्दीन चिश्ती
- बाबा फरीद
- शेख नुरूद्दीन
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- बहाउद्दीन जकारिया
- अमीर खुसरो
- गेसूदराज

सूफियों में किसी उस्ताद, औलिया या पीर की देख रेख में अलग– अलग तरह से दिव्य शक्ति के नजदीक आने के तरीके विकसित हुए। कभी नाच कर, कभी गा कर, तो कभी केवल मनन चिंतन करके। उस्ताद पीढ़ी दर पीढ़ी शागिर्दों को सीख देते थे। इस तरह कई सिलसिलों की शुरूआत हुई। हर सिलसिले का काम करने का, विचारों का, अपना ही तरीका होता था। धीरे–धीरे हिन्दुस्तान में मध्य एशिया से भी सूफी आने लगे। ग्यारहवीं सदी तक हिन्दुस्तान दुनिया में सूफी सिलसिलों के लिए जाना जाने लगा। उस समय के कई सिलसले तो आज तक महत्वपूर्ण हैं।

इस तरह के सिलसिलों में एक प्रमुख था–चिश्ती सिलसिला। इसमें औलियाओं की एक लम्बी कतार रही है जो आज तक चली आ रही हैं। अजमेर के ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, पंजाब के बाबा फरीद, दिल्ली के हजरत निजामुद्दीन औलिया आज भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इनके काव्य आज भी काफी प्रचलित हैं। कुछ प्रमुख सूफी सन्तों का वर्णन यहाँ दिया जा रहा है।

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती– ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती 1192 ई. के पूर्व में भारत आए थे और बाद में इन्होंने ही भारत में सूफी मत में चिश्ती सिलसिला की शुरूआत की। भारत में कई स्थानों पर घूमने के

बाद वे अजमेर में स्थायी रूप से बस गए। अजमेर में सन्त मोईनुद्दीन चिश्ती की प्रसिद्ध दरगाह 'अजमेर शरीफ' के नाम से जानी जाती है। इनके मुरीद या चाहने वाले इन्हें 'ख्वाजा साहब' या 'गरीब नवाज' के नामों से भी याद करते हैं। इनके एक शिष्य शेख हमीदउद्दीन नागौरी ने नागौर के पास सुवल गांव में अपना केन्द्र बनाकर इस्लाम का प्रचार किया। चिश्ती सिलसिला संगीत को ईश्वर प्रेम का महत्वपूर्ण साधन मानता है।

अजमेर शरीफ दरगाह

हजरत निजामुद्दीन औलिया :– भारत में सूफी सन्तों में हजरत निजामुद्दीन औलिया का नाम प्रमुख है, जिनके नेतृत्व में चिश्ती सिलसिले का भारत भर में विकास हुआ। एक विशेष धर्म का अनुयायी होते हुए भी औलिया में धार्मिक और सामाजिक कट्टरता नहीं थी। हिन्दू–मुसलमानों की एकता एवं समाज सुधार में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे मनुष्य मात्र की एकता के सच्चे प्रतीक रहे हैं। हजरत निजामुद्दीन के विचार में संगीत ईश्वरीय प्रेम एवं सौन्दर्य से साक्षात्कार करने का अनूठा माध्यम है। भारतीय भक्ति भावना से भी सूफी–परम्परा में संगीत को प्रोत्साहन मिला है। सल्तनतकालीन प्रसिद्ध लेखक अमीर खुसरो इन्हीं के शिष्य थे। नई दिल्ली स्थित दरगाह परिसर में हजरत निजामुद्दीन औलिया की मजार के पास ही अमीर खुसरो की भी मजार है।

अमीर खुसरो

सूफी मत में कई सम्प्रदाय हैं, पर भारत में सिर्फ चार सम्प्रदायों का महत्व रहा है। यथा– कादरी, चिश्ती, सुहरावर्दी तथा नक्शबन्दी। सूफ़ियों और भक्ति संतों में बहुत समानताएँ हैं। जैसे गुरू का महत्व, नाम स्मरण, प्रार्थना, ईश्वर के प्रति प्रेम, व्याकुलता एवं विरह की स्थिति, संसार की क्षण भंगुरता, जीवन की सरलता, सच्ची साधना, मानवता से प्रेम, ईश्वर की एकता तथा व्यापकता आदि भक्ति व सूफी दोनों ही आन्दोलनों का आधार रही है। भक्ति आन्दोलन एवं सूफ़ी मत दोनों ने ही ईश्वरीय प्रेम के द्वारा मानवता का मार्ग प्रशस्त किया है।

शब्दावली

निर्गुण	–	निराकार
एकेश्वरवाद	–	केवल एक ईश्वर में विश्वास करना
सगुण	–	साकार
सिलसिला	–	पंथ या मत

अभ्यास प्रश्न

1. प्रश्न संख्या एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखें–
   (1) ननकाना साहिब किस संत का जन्म स्थान है।
   (अ) कबीर (ब) नानक
   (स) दादू दयाल (द) रामानन्द ( )
   (2) चैतन्य महाप्रभु का सम्बन्ध कहाँ से था ?
   (अ) बंगाल (ब) राजस्थान
   (स) गुजरात (द) महाराष्ट्र ( )
2. स्तम्भ अ को स्तम्भ ब से सुमेलित करें ?

	स्तम्भ अ	स्तम्भ ब
(1)	कबीर	बंगाल
(2)	मीराबाई	तलवंडी
(3)	गुरूनानक	मेड़ता
(4)	चैतन्य महाप्रभु	बनारस

3. भक्ति में किस पर अधिक जोर दिया जाता है ?
4. महाराष्ट्र के प्रमुख सन्तों के नाम बताइए।
5. भक्ति आन्दोलन के सन्तों के उपदेशों की भाषा कैसी थी ?
6. मीराबाई का संक्षेप में परिचय दीजिए ।
7. कबीर की प्रमुख शिक्षाएँ बताइए?
9. सूफी व भक्ति सन्तों के उपदेशों में क्या समानताएँ थी ?
10. गुरू नानक के उपदेशों को लिखिए।
11. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का परिचय लिखिये।
12. समर्थ गुरु रामदास के बारे में आप क्या जानते हैं ?

गतिविधि–

1. कबीर के पदों का संकलन कीजिए।
2. भक्ति एवं सूफी आन्दोलन के चित्रों का संकलन करें एवं लय के साथ गाने का अभ्यास करें।
3. कबीर के कुछ दोहों को याद कीजिए एवं बाल सभा में गाकर सुनाइए।
4. अपने क्षेत्र के आस–पास के प्रसिद्ध पूजा स्थलों यथा–मन्दिरों, मस्जिदों, गुरूद्वारों, गिरजाघरों आदि की सूची बनाएँ और उनके बारे में जानकारी एकत्र करें।
5. भक्ति व सूफी धारा के प्रमुख संतों की शिक्षाओं पर अपनी कक्षा में परिचर्चा करें।